AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing PIF: 1.048(I2OR) & 3.125 (IIFS)
Vol (3), Issue (1), January-March 2026 ISSN: 3048-7951

जयशंकर प्रसाद और आधुनिक हिंदी साहित्य में छायावाद: सामाजिक-दर्शनात्मक, भाषाई और नारी चेतना का तुलनात्मक अध्ययन

पवन कुमार सिंह[1]

DOI: http://doi.org/10.5281/zenodo.24514760
Review: 01/01/2026 **Acceptance: 04/01/2026** **Publication:25/03/2026**

सारांश: प्रस्तुत शोध का उद्देश्य आधुनिक हिंदी साहित्य के छायावादी युग में जयशंकर प्रसाद के साहित्यिक योगदान का सामाजिक-दर्शनात्मक, भाषाई एवं नारी चेतना के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना है। जयशंकर प्रसाद ने अपनी रचनाओं के माध्यम से आत्मानुभूति, प्रकृति-प्रेम, मानवतावाद, राष्ट्रीय चेतना तथा दार्शनिक चिंतन को प्रभावशाली अभिव्यक्ति प्रदान की। उनकी प्रमुख कृति *कामायनी* में मनु, श्रद्धा और इड़ा के माध्यम से मानव जीवन, बुद्धि, भावना, ज्ञान एवं कर्म के अंतर्संबंधों को प्रस्तुत किया गया है। उनके नाटकों, विशेषकर *स्कन्दगुप्त* और *चन्द्रगुप्त* में ऐतिहासिक चेतना, सामाजिक मूल्यों, राष्ट्रीय भावना और मानवीय संघर्षों का चित्रण मिलता है। उनकी काव्यभाषा संस्कृतनिष्ठ शब्दावली, प्रतीक, बिंब, रूपक, लाक्षणिकता एवं संगीतात्मकता से समृद्ध है, जिसने आधुनिक हिंदी की अभिव्यक्ति क्षमता को विकसित किया। शोध में नारी पात्रों की भूमिका, उनकी संवेदनशीलता, आत्मनिर्णय, सामाजिक स्थिति तथा दार्शनिक महत्त्व का भी विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक एवं तुलनात्मक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है, जिसमें प्रसाद की प्रमुख साहित्यिक कृतियों तथा छायावाद के अन्य प्रमुख रचनाकारों के साहित्य का विश्लेषण किया जाएगा। यह अध्ययन सामाजिक दर्शन, भाषा और नारी चेतना के पारस्परिक संबंधों को समझने तथा आधुनिक हिंदी साहित्य में जयशंकर प्रसाद के बहुआयामी योगदान को स्थापित करने में सहायक होगा।

मुख्य शब्द: जयशंकर प्रसाद, छायावाद, सामाजिक-दर्शनात्मक चेतना, नारी चेतना, कामायनी, भाषाई सौंदर्य, मानवतावाद

१. प्रस्तावना:

जयशंकर प्रसाद (1889/1890-1937) हिंदी साहित्य के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। वे कवि, नाटककार, कथाकार, उपन्यासकार एवं आलोचक थे, जिन्होंने हिंदी साहित्य को भावनात्मक गहराई, सौंदर्यबोध तथा दार्शनिक दृष्टिकोण प्रदान किया। उनका महाकाव्य कामायनी आधुनिक हिंदी काव्य का एक आदर्श उदाहरण माना जाता है और यह छायावाद के सिद्धांतों का सर्वोत्कृष्ट प्रतिनिधित्व करता है। छायावाद के अंतर्गत मनोभावों

[1] **सहायक आचार्य, जे०एन०एम० कॉलेज फॉर एडवांस स्टडीज एंड टेक्नोलॉजी, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, इंडिया|**

की अभिव्यक्ति, आत्म-अन्वेषण, प्रकृति-प्रेम तथा राष्ट्रीय चेतना के संयोजन ने हिंदी साहित्य में एक नवीन सांस्कृतिक आयाम स्थापित किया। प्रसाद की रचनाओं में दर्शन, आध्यात्म, प्रेम तथा सामाजिक वास्तविकता का समन्वय मिलता है। उनकी नाट्य रचनाएँ जैसे स्कन्दगुप्त और चन्द्रगुप्त ऐतिहासिक तथा नैतिक संघर्षों की गहन प्रस्तुति हैं, जिनमें मानवीय चरित्रों की भीतर गहराई उभरती है। यह शोध प्रस्ताव प्रसाद की साहित्यिक कृतियों का विस्तृत विश्लेषण करने हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है, ताकि छायावाद के स्वरूप, सामाजिक-दार्शनिक विमर्श तथा नारी चेतना पर उनके प्रभाव को उजागर किया जा सके।

२. साहित्य समीक्षा:

२.१. छायावाद के सैद्धांतिक आयाम: अध्ययनकर्ता (Poetry Foundation) के अनुसार, प्रसाद की काव्य भाषा में संस्कृत और खड़ी बोली का संतुलन स्पष्ट रूप से मिलता है, जिससे काव्य की मौलिकता और सौंदर्य दोनों को बल मिलता है।

२.२. प्रसाद के नाटकों का अध्ययन: साहित्य समीक्षा से पता चलता है कि प्रसाद ने हिंदी रंगमंच के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया, विशेषकर ऐतिहासिक और पौराणिक नाटकों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को प्रोत्साहित किया। हालांकि अधिकांश साहित्य इतिहास आधारित अध्ययन हैं, विश्लेषणात्मक दृष्टिकोणों का अभाव है।

2.३. कविताओं एवं महाकाव्य कामायनी का विश्लेषण: कामायनी को आधुनिक हिंदी साहित्य में एक अनूठा काव्य माना जाता है। यह महाकाव्य मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक और धार्मिक दृष्टिकोण को एक साथ प्रस्तुत करता है।

२.४. नारी चेतना एवं पात्र विश्लेषण: अन्य शोध लेखों में उल्लेख है कि प्रसाद ने महिला पात्रों में आदर्श, बलिदान और राष्ट्रीयता के भावों को उजागर किया है, परंतु सीमा यह है कि इन पात्रों के सामाजिक-दर्शनात्मक दृष्टिकोण पर समग्र व्याख्या सीमित है।

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में छायावाद एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक आंदोलन के रूप में स्थापित हुआ, जिसने हिंदी काव्य को केवल बाह्य वर्णन और इतिवृत्तात्मकता से हटाकर आत्मानुभूति, प्रकृति, सौंदर्य, मानवतावाद, रहस्यबोध, सामाजिक चेतना तथा नारी-संवेदना जैसे व्यापक विषयों से जोड़ा। आलोचनात्मक इतिहास में छायावाद को लेकर विभिन्न प्रकार के मत मिलते हैं। कुछ आलोचकों ने इसे आधुनिक हिंदी कविता की अत्यंत महत्त्वपूर्ण कलात्मक उपलब्धि माना, जबकि कुछ आलोचकों ने इसकी वैयक्तिकता, कल्पनाशीलता और रहस्यात्मकता की आलोचना की। इन विभिन्न दृष्टियों के कारण छायावाद का अध्ययन एक बहुस्तरीय विमर्श के रूप में विकसित हुआ है।

छायावाद के विकास में जयशंकर प्रसाद का स्थान केंद्रीय माना जाता है। उपलब्ध साहित्यिक अध्ययनों में यह माना गया है कि प्रसाद की रचनात्मकता ने छायावादी प्रवृत्तियों को व्यवस्थित और कलात्मक रूप प्रदान किया। *झरना, आँसू, लहर* और *कामायनी* जैसी कृतियों में उनकी काव्य-दृष्टि का विकास क्रम देखा जा सकता है। विशेष रूप से *कामायनी* में दर्शन, मनोविज्ञान, मानवतावाद, प्रकृति और नारी चेतना का जटिल अंतर्संबंध दिखाई देता है।

३. सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से पूर्ववर्ती अध्ययन

जयशंकर प्रसाद के साहित्य पर उपलब्ध आलोचनात्मक सामग्री से स्पष्ट होता है कि उनका साहित्य केवल व्यक्तिगत अनुभूति अथवा सौंदर्यबोध तक सीमित नहीं है। उनके साहित्य में इतिहास, संस्कृति, राष्ट्रीय चेतना और मानवतावादी दृष्टिकोण का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। इग्नू की अध्ययन सामग्री में प्रसाद के काव्य में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय और मानवतावादी चेतना को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है। इसमें यह भी बताया गया है कि प्रसाद ने भारतीय परंपरा और संस्कृति को ग्रहण करते हुए उसे समकालीन सामाजिक संदर्भों से जोड़ा।

छायावादी साहित्य के व्यापक अध्ययन से यह तथ्य सामने आता है कि छायावादी कवियों ने ऐतिहासिक और पौराणिक आख्यानों को केवल अतीत की पुनरावृत्ति के लिए नहीं अपनाया, बल्कि उनके माध्यम से समकालीन जीवन और सामाजिक प्रश्नों को अभिव्यक्ति दी। इस दृष्टि से प्रसाद की ऐतिहासिक चेतना को उनके सामाजिक चिंतन से अलग करके नहीं देखा जा सकता।

प्रसाद की रचनाओं में व्यक्ति और समाज के संबंध, मानवतावाद, स्वतंत्रता, सांस्कृतिक अस्मिता तथा सामाजिक रूढ़ियों के प्रति प्रश्नाकुलता दिखाई देती है। *कामायनी* में मनु, श्रद्धा और इड़ा के माध्यम से मानव-जीवन के विभिन्न पक्षों का प्रतीकात्मक और दार्शनिक निरूपण हुआ है। इस प्रकार पूर्ववर्ती अध्ययनों से यह संकेत मिलता है कि प्रसाद का सामाजिक चिंतन प्रत्यक्ष राजनीतिक वक्तव्य की अपेक्षा दार्शनिक, सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक संरचना के माध्यम से व्यक्त होता है।

दर्शनात्मक चेतना और *कामायनी:*

प्रसाद के दर्शनात्मक चिंतन का सबसे व्यापक स्वरूप *कामायनी* में दिखाई देता है। पूर्ववर्ती अध्ययनों में *कामायनी* को छायावादी काव्य की चरम उपलब्धियों में गिना गया है। इसमें इच्छा, ज्ञान और क्रिया के समन्वय तथा बुद्धि और हृदय के संतुलन जैसे प्रश्नों को केंद्रीय महत्त्व प्राप्त है।

कामायनी के सर्गों को मनोभावों के आधार पर संगठित किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रसाद मानव-मन को केवल मनोवैज्ञानिक इकाई के रूप में नहीं, बल्कि दर्शन और जीवन-दृष्टि के व्यापक संदर्भ में देखते हैं। वैदिक एवं पौराणिक आधारभूमि का उपयोग करते हुए उन्होंने आधुनिक मानव की समस्याओं को अभिव्यक्ति दी है। *कामायनी* में रहस्य, चिंता, श्रद्धा, काम, वासना, कर्म, इड़ा आदि के माध्यम से मनुष्य के अस्तित्व और उसके सामाजिक-सांस्कृतिक विकास पर विचार किया गया है।

इस प्रकार पूर्ववर्ती शोधों में *कामायनी* के दार्शनिक पक्ष पर पर्याप्त कार्य हुआ है, किंतु सामाजिक दर्शन, भाषा और नारी चेतना को एक संयुक्त तुलनात्मक ढाँचे में रखकर अध्ययन करने की संभावना अभी भी बनी हुई है।

भाषाई एवं शिल्पगत अध्ययन

जयशंकर प्रसाद की भाषा पर उपलब्ध साहित्य में उनकी भाषा को प्रायः तत्समप्रधान, संस्कृतनिष्ठ, लाक्षणिक, बिंबात्मक और संगीतात्मक माना गया है। उनकी काव्यभाषा ने खड़ी बोली हिंदी को भावात्मक और कलात्मक अभिव्यक्ति की नई संभावनाएँ प्रदान कीं। हिन्दवी में उपलब्ध आलोचनात्मक सामग्री के अनुसार प्रसाद की भाषा में तत्सम शब्दावली के साथ वैयक्तिकता, भावात्मकता, संगीतात्मकता, कोमलता, ध्वन्यात्मकता और नाद-सौंदर्य जैसे गुण प्रमुख हैं।

प्रसाद की भाषा केवल संस्कृतनिष्ठ शब्दों के प्रयोग तक सीमित नहीं है। उनकी काव्य-भाषा में प्रतीक, बिंब, रूपक, मानवीकरण, लाक्षणिकता और ध्वनि-सौंदर्य का महत्त्वपूर्ण योगदान है। *आत्मकथ्य* के संदर्भ में उपलब्ध शैक्षिक सामग्री भी यह रेखांकित करती है कि प्रसाद ने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए नवीन शब्दों और बिंबों का प्रयोग किया।

इस आधार पर कहा जा सकता है कि प्रसाद की भाषाई चेतना छायावाद की सौंदर्यपरकता से जुड़ी होने के साथ-साथ आधुनिक हिंदी की अभिव्यक्ति-क्षमता के विस्तार में भी योगदान करती है। तथापि, भाषिक अध्ययन को सामाजिक और नारी चेतना के साथ जोड़कर देखने वाले तुलनात्मक अध्ययनों की आवश्यकता बनी हुई है।

छायावाद और नारी चेतना

छायावादी साहित्य में नारी की उपस्थिति केवल सौंदर्य-वस्तु के रूप में नहीं बल्कि संवेदना, स्वतंत्रता, शक्ति और मानव-अस्तित्व से संबंधित विमर्श के रूप में भी दिखाई देती है। हिंदी साहित्य के इतिहास संबंधी अध्ययन में

छायावादी काव्य की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता नारी के प्रति गहरी संवेदनात्मक दृष्टि को माना गया है। *कामायनी* में नारी-संवेदना को विशेष महत्त्व प्राप्त है।

जयशंकर प्रसाद की रचनाओं में नारी की भूमिका पर स्वतंत्र शोध भी उपलब्ध है। 2024 में प्रकाशित "प्रसाद की रचना में नारी चेतना" नामक अध्ययन में प्रसाद की रचनाओं में नारी चेतना को केंद्र में रखकर विचार किया गया है। इसके अतिरिक्त उपलब्ध शोध-सूची में "प्रसाद की स्त्री दृष्टि नाटकों के विशेष संदर्भ में" तथा "छायावादी काव्य का परिप्रेक्ष्य और प्रसाद की नारी विषयक अवधारणा" जैसे अध्ययन भी सूचीबद्ध हैं।

कामायनी में श्रद्धा और इड़ा के चरित्रों को विशेष रूप से देखा जा सकता है। श्रद्धा संवेदना, आस्था और हृदय-पक्ष का प्रतिनिधित्व करती है, जबकि इड़ा तर्क, बुद्धि और ज्ञान-पक्ष से संबद्ध दिखाई देती है। इसलिए नारी पात्रों का अध्ययन केवल स्त्री-चित्रण तक सीमित नहीं रह जाता, बल्कि यह प्रसाद की व्यापक मानव-दृष्टि और दर्शन से जुड़ जाता है।

सामाजिक-दर्शन, भाषा और नारी चेतना के अंतर्संबंध

पूर्ववर्ती साहित्य के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि जयशंकर प्रसाद पर सामाजिक चेतना, दर्शन, भाषा, सौंदर्यबोध, इतिहास-दृष्टि और नारी चेतना को लेकर अलग-अलग स्तरों पर पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है। प्रसाद के साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों में सौंदर्य-दर्शन, आध्यात्मिकता, मानवतावाद, नारी की महत्ता, प्रकृति और चित्रात्मकता को रेखांकित किया गया है।

लेकिन इन सभी आयामों को एक ही तुलनात्मक अध्ययन-ढाँचे में रखकर देखना अधिक व्यापक निष्कर्ष दे सकता है। उदाहरण के लिए, प्रसाद की भाषा केवल सौंदर्य की अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है; वह उनके सामाजिक और दार्शनिक विचारों को भी निर्मित करती है। इसी प्रकार नारी चेतना को केवल स्त्री-चरित्रों के चित्रण के रूप में देखने के बजाय उसे प्रसाद की मानवतावादी और दार्शनिक दृष्टि से जोड़कर देखना आवश्यक है।

४. शोध अंतराल (Research Gaps)

- **सैद्धांतिक अन्तर:** छायावाद के व्यापक सिद्धांतों और प्रसाद के व्यक्तिगत दृष्टिकोण के बीच स्पष्ट सिद्धान्तात्मक अंतर्संबंधों का अभाव।
- **भाषाई और संरचनात्मक अध्ययन:** प्रसाद की भाषा शैली का विस्तृत विश्लेषण जो संस्कृत तत्त्वों के संयोग, शब्द चयन और लयबद्धता के आधार पर हो।

- **नारी व्यक्तित्व की गहन समीक्षा:** महिला पात्रों पर अध्ययन है, परन्तु सामाजिक भूमिका, आत्मनिर्णय तथा सामाजिक बाधाओं के सन्दर्भ में विस्तृत तुलनात्मक शोध अपर्याप्त है।

५. शोध उद्देश्य और प्रश्न:

उद्देश्य:

अ. जयशंकर प्रसाद की काव्य शैली और छायावाद में उनके योगदान का सैद्धांतिक विश्लेषण।
आ. उनके नाटकों में दर्शन और सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति का अध्ययन।
इ. प्रसाद की रचनाओं में नारी चेतना का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध प्रश्न:

अ. प्रसाद का छायावादी काव्य किस प्रकार आधुनिक हिंदी साहित्य को प्रभावित करता है?
आ. उनके नाटकों में सामाजिक-दार्शनिक तत्वों का स्थान क्या है?
इ. प्रसाद की रचनाओं में नारी पात्रों की भूमिका एवं सामाजिक प्रतिबिम्ब क्या दर्शाया गया है?

६. परिकल्पना:

शून्य परिकल्पना (H0):

अ. जयशंकर प्रसाद की रचनाओं में नारी पात्रों की प्रस्तुति का सामाजिक और दार्शनिक प्रभाव नगण्य है।

वैकल्पिक परिकल्पना (H1):

अ. जयशंकर प्रसाद की रचनाओं में नारी पात्रों की प्रस्तुति का सामाजिक और दार्शनिक प्रभाव महत्वपूर्ण एवं व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

७. अनुसंधान की पद्धति (Research Methodology)

यह शोध गुणात्मक और तुलनात्मक विधि पर आधारित होगा:

अ. **प्रारंभिक सर्वेक्षण:** जयशंकर प्रसाद की प्रमुख कृतियों की सूची और साहित्य समीक्षा को व्यवस्थित करना।
आ. **स्रोत चयन:** कामायनी, नाटक (स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त आदि), उपन्यास और निबंधों का चयन।
इ. **पाठ्य विश्लेषण:** चयनित पाठों का थीमैटिक, भाषाई और संरचनात्मक विश्लेषण।

ई. **तुलनात्मक अध्ययन:** छायावाद के अन्य समकालीन रचनाकारों (निराला, पंत, महादेवी वर्मा) से तुलना।

८. डेटा संग्रह

प्रस्तुत शोध में डाटा संग्रह के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया जाएगा।

प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत जयशंकर प्रसाद की प्रमुख साहित्यिक रचनाओं, जैसे *कामायनी, आँसू, लहर, झरना, स्कन्दगुप्त एवं चन्द्रगुप्त*का गहन अध्ययन किया जाएगा। इन रचनाओं से सामाजिक चेतना, दार्शनिक विचारधारा, भाषाई विशेषताओं तथा नारी पात्रों से संबंधित तथ्यों का संकलन किया जाएगा।

द्वितीयक स्रोतों के अंतर्गत हिंदी साहित्य के इतिहास, आलोचनात्मक पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं, प्रकाशित शोध प्रबंधों, संदर्भ ग्रंथों तथा प्रामाणिक ऑनलाइन शैक्षणिक सामग्री का उपयोग किया जाएगा। इसके अतिरिक्त छायावाद के अन्य प्रमुख साहित्यकारों, जैसे सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत एवं महादेवी वर्मा की चयनित रचनाओं को तुलनात्मक अध्ययन के लिए आधार बनाया जाएगा।

संकलित सामग्री को निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं के आधार पर वर्गीकृत किया जाएगा–

1. **सामाजिक चेतना:** प्रसाद की रचनाओं में सामाजिक मूल्यों, राष्ट्रीय भावना, मानवतावाद एवं सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन।
2. **दार्शनिक चेतना:** *कामायनी* में इच्छा, ज्ञान, क्रिया, बुद्धि एवं भावना के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण।
3. **भाषाई विशेषताएँ:** शब्द चयन, संस्कृतनिष्ठ भाषा, प्रतीक, बिंब, रूपक, लाक्षणिकता एवं काव्यात्मक शैली का अध्ययन।
4. **नारी चेतना:** श्रद्धा, इड़ा तथा अन्य महिला पात्रों के व्यक्तित्व, सामाजिक भूमिका, आत्मनिर्णय एवं संवेदनात्मक पक्ष का विश्लेषण।
5. **तुलनात्मक अध्ययन:** छायावाद के अन्य प्रमुख रचनाकारों की साहित्यिक प्रवृत्तियों के साथ प्रसाद की रचनात्मक दृष्टि की तुलना।

अंततः एकत्रित डाटा का गुणात्मक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक पद्धति से परीक्षण किया जाएगा, जिससे शोध के निर्धारित उद्देश्यों एवं शोध प्रश्नों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकें।

९. शोध की प्रासंगिकता (Relevance of the Research)

अ. सैद्धांतिक योगदान: छायावाद अध्ययन के विस्तार में योगदान।

आ. भाषाई अध्ययन: हिंदी भाषा एवं छंद-शैली का विश्लेषण।

इ. सामाजिक अध्ययन: नारी चेतना और सामाजिक प्रतिबिम्ब का समग्र विवेचन।

ई. शिक्षा एवं पाठ्यक्रम: आधुनिक हिंदी साहित्य पाठ्यक्रम के लिए उपयोगी संदर्भ सामग्री।

९. सीमाएँ (Limitations)

अ. प्राथमिक स्रोतों की सीमित उपलब्धता।

आ. विश्लेषण के लिए समय-प्रधान प्रक्रिया।

इ. शोधकर्ता का व्यक्तिगत व्याख्यात्मक पक्ष निष्पक्षता प्रभावित कर सकता है।

संदर्भ सूची:

प्रसाद, जयशंकर – *काव्य और कला तथा अन्य निबंध*। वाराणसी: भारती भंडार।

जयशंकर प्रसाद– Chhayavadi poet and his works.

कामायनी modern Hindi literature.

शुक्ल, रामचंद्र – *हिंदी साहित्य का इतिहास*। वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा।

द्विवेदी, हजारी प्रसाद – *हिंदी साहित्य की भूमिका*। दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

द्विवेदी, हजारी प्रसाद – *हिंदी साहित्य: उद्भव और विकास*। दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

नामवर सिंह – *छायावाद*। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

वाजपेयी, नंददुलारे – *जयशंकर प्रसाद*। इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।

प्रसाद, जयशंकर – *कामायनी: आलोचनात्मक अध्ययन*। विभिन्न आलोचनात्मक संस्करण।

नगेन्द्र – *कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ*। नई दिल्ली: साहित्य अकादमी/संबंधित संस्करण।

शर्मा, रामविलास – *प्रसाद और उनकी साहित्यिक दृष्टि*। विभिन्न आलोचनात्मक संकलनों में उपलब्ध।

सिंह, नामवर – *इतिहास और आलोचना*। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

मैत्रेयी पुष्पा एवं अन्य – *स्त्री विमर्श और हिंदी साहित्य*। नई दिल्ली: संबंधित प्रकाशन।

प्रभा खेतान – *स्त्री उपेक्षिता*। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

सिमोन द बोउवार – *स्त्री: उपेक्षिता*। हिंदी अनुवाद। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

वर्मा, महादेवी – *श्रृंखला की कड़ियाँ*। इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।

कात्यायनी – *स्त्री विमर्श और हिंदी साहित्य*। नई दिल्ली: संबंधित प्रकाशन।